NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

अलसी के प्रमुख रोग एंव एकीकृत रोग प्रबंधन

रजनीश कुमार अवस्थी[1], सत्येन्द्र नाथ सिंह[2], सुजीत प्रताप सिंह[3], अजय कुमार[4], हिमांशू कुमार गुप्ता[1], विश्व विजय रघुवंशी[5]

सारांश

अच्छे स्वास्थ के लिए हम पौष्टिक आहार का सेवन करते हैं। अलसी ऐसा ही एक सुपर फूड हैं, अलसी के बीज अधिक गुणों से भरपूर बीजों में से एक हैं। अलसी का सेवन हम न केवल दैनिक आहार में शामिल कर सकते हैं, बल्कि इसका इस्तेमाल औषधि के रूप में भी किया जाता है। आमतौर पर ये आकार में छोटे व भूरे रंग के होते हैं। अलसी की फसल में विभिन्न प्रकार की बीमारियां पाई जाती हैं जिसके कारण प्रतिवर्ष इसकी उपज में कुछ न कुछ हानि अवश्य होती हैं। अगर हम इन बीमारियों को एकीकृत रोग प्रबंधन करके नियंत्रित कर लें तो इन बीमारियों द्वारा प्रतिवर्ष होने वाली हानि को कम किया जा सकता हैं।

अलसी के प्रमुख रोग :–

गेरुआ रोग (रस्ट रोग)

अलसी में गेरूआ रोग *मेलेम्पसोरा लाइनाई* नाम फफूंद द्वारा होता हैं, यह रोग फली सहित पौधे के सभी वायवी भागों पर हमला करता हैं, रोग का प्रथम लक्षण पौधो की पत्तियों एंव तनों पर चमकीले या नारंगी के छाले जैसे पाश्चूलस दिखाई देते हैं।रोग का संक्रमण धीरे–धीरे फैलता है, और कभी–कभी पूरा पौधा पीले नारंगी रंग के पाश्चूलस से ढ़क जाता है। संक्रमण के बाद के चरणों में ये पाश्चूलस धीरे–धीरे काली पपड़ी में बदल जाते हैं। गम्भीर संक्रमण होने पर फलियों में बीज का निमार्ण नही होता यदि बीज बनते भी हैं तो अल्प मात्रा में सिकुड़े हुए बीज बनते हैं।

एकीकृत रोग प्रबंधन :

फसल को रोग से बचाने के हेतु फसल की रोग–रोधी किस्में उगानी चाहिए जैसे – किरन, हिमालिनी, सुरभी, मीरा, आदि किस्मों की अगेती बुवाई करनी चाहिए।

रजनीश कुमार अवस्थी[1], सत्येन्द्र नाथ सिंह[2], सुजीत प्रताप सिंह[3], अजय कुमार[4], हिमांशू कुमार गुप्ता[1], विश्व विजय रघुवंशी[5]

शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग, पी.जी. कालेज गाजीपुर[1] (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर – 222001)

प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, पी.जी. कालेज गाजीपुर[2] (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर – 222001)

वैज्ञानिक अधिकारी, पादप रोग विज्ञान अनुभाग[3] (उ. प्र. गन्ना शोध परिषद् शाहजहांपुर – 242001)

सहायक प्राध्यापक, अमर सिंह पी.जी. कालेज लखावटी बुलंदशहर[4] (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ उ. प्र. – 250001)

शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या।

- बीजों की बुवाई करने से पहले बीजशोधन अवश्य करें। बीज शोधन हेतु आक्सीकार्बोसिन की 2.5 ग्राम मात्रा को प्रति किलोग्राम बीज शोधन हेतु प्रयोग करना चाहिए।
- रोग के रासायनिक नियंत्रण हेतु केलोक्सिन 0.05 प्रतिशत घोल का दो से तीन बार खड़ी फसल पर पर्णीय छिड़काव करना चाहिए।

अल्टनेरिया झुलसा रोग :

यह रोग *अल्टनेरिया लाइनाई* फफूंद के द्वारा होता हैं। इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों की उपरी सतह पर गहरे भूरे रंग के गोल धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। शरूआती दौर में रोग के प्रारम्भिक लक्षण नई पत्तियों की सतह पर गहरे भूरे रंग के संक्रमण के रूप में दिखाई देते हैं, जो कि आधार से शरू होते हैं और धीरे–धीरे ऊपर की ओर बढ़कर तने, शाखाओं, पुष्पक्रमों एवं फलियों को प्रभावित करते हैं। रोग की उग्र अवस्था में फलियां काली पड़कर मर जाती हैं।

एकीकृत रोग प्रबंधन :

- फसल की बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह में करने से रोग के संक्रमण की सम्भावनाएं कम हो जाती हैं।
- फसल की बुवाई करने से पहले बीजोपचार अवश्य करें।
- बीजोपचार हेतु 2.5 ग्राम थीरम प्रति किलो ग्राम बीजों के साथ बीज उपचारित करें।
- रोग रोधी किस्मों को उगाना चाहिए जैसे– पद्मिनी, शेखर, शिखा, जीवन इत्यादि किस्मों की बुवाई करनी चाहिए।
- खड़ी फसल में मैनकोजेब 2.5 किलो ग्राम प्रति हे. की दर से 40–45 दिनों में दो बार छिड़काव करें। रोग की उग्रता में 15 दिनों बाद तीसरा छिड़काव भी कर सकते हैं।

उकठा या विल्ट रोग :

अलसी का यह एक प्रमुख मृदा जनित रोग हैं, जो कि *फ्यूजेरियम स्पे.* के कारण होता हैं। इस रोग का संक्रमण अंकुरण से लेकर खड़ी फसल की किसी भी अवस्था में हो सकता हैं। इस रोग से संक्रमित पौधों की पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं जिससे सर्वप्रथम पुरानी पत्तियों पर हरिमाहीनता जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं जोकि पुरानी पत्तियों से नयी पत्तियों की ओर बढ़ते हैं। कुछ समय पश्चात सम्पूर्ण पौधा मुर्झाया हुआ दिखाई पड़ता हैं। और इस प्रकार पूरी की पूरी खड़ी फसल सूख जाती है।

एकीकृत रोग प्रबंधन :

- फसल की बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह में करनी चाहिए।

- रोगरोधी किस्मों को उगाना चाहिए जैसे– टी–397, किरन, जानकी, पद्मिनी, इत्यादि किस्मों की बुवाई करनी चाहिए।
- बीजो को बुवाई से पहले 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा प्रति किलो ग्राम बीज की दर से शोधित करना चाहिए।

चूर्णिल आसिता या भभूतिया रोग :

अलसी के इस रोग को बुकनी रोग के नाम के भी जाना जाता हैं। अलसी में यह रोग *ओडियम लाइनाई* फफूंद द्वारा होता हैं। इस रोग से संक्रमित पौधो की पत्तियों पर सफेद चूर्ण सा पाउडर बिखरा हुआ दिखाई पड़ता हैं, जिससे सम्पूर्ण पत्तियां पाउडर से ढकी दिखाई पड़ती हैं। संक्रमित पौधों की वृध्दि रूक जाती है और यदि संक्रमण फली बनने से पहले होता है तो या पौधो में फलियों का निर्माण ही नहीं होता यदि फलियों का निर्माण होता भी हैं तो उनमें अल्प मात्रा में सिकुड़े हुए दानों का निर्माण होता हैं। शरदकालीन वर्षा होने से यदि वातावरण में अधिक समय तक आद्रता बनी रहती हैं तो रोग का संक्रमण बढ़ जाता हैं, तथा देर से बुवाई करने से भी रोग के संक्रमण का भय रहता हैं।

एकीकृत रोग प्रबंधन :

- रोग रोधी किस्मों को उगाना चाहिए जैसे–

जे–23, पद्मिनी, मीरा, जानकी इत्यादि किस्मों की बुवाई करनी चाहिए।

- रोग की रोकथाम करने के लिए घुलनशील गंधक के 0.25 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE